

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

(मुद्रण तारीख :- 31.12.2015)

■ अंक-389 ■ तारीख- 01 जनवरी 2016, पौष कृष्ण पक्ष - 07 ■ शुक्रवार ■ उदयपुर ■ कुल पृष्ठ-2 ■ मूल्य -1 रूपया

(पृष्ठ-1)

सुख-शान्ति एवं समृद्धि की
मंगलकामनाओं के साथ

2016

आप एवं आपके परिजनो को
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें!

★ ★ ★ ★ ★
मन की जीत परिवार की ओर से सभी पाठकों को
नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ। ★ ★ ★ ★ ★

(सत्यसाई बाबा)

अनमोल वचन



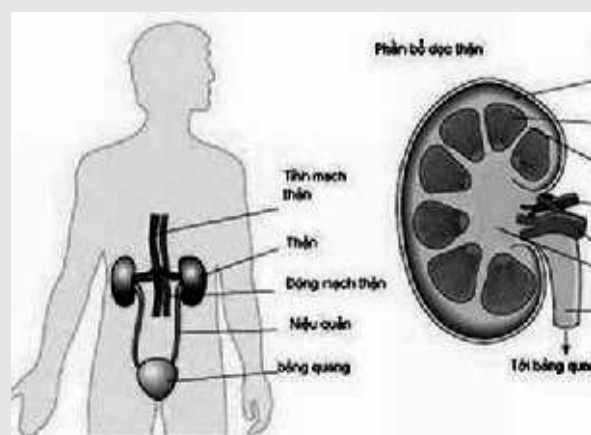
भगवान उनकी मौजूदगी की घोषणा नहीं करता है या दरवाजा नहीं पीटता, वह तो बस इंतजार करता है। जैसे ही तुम थोड़ा-सा दरवाजा खोलते हो, सूरज की रोशनी तुरंत भीतर से अंधेरे को बाहर कर देती है। इसलिए जब भी भगवान से मदद मांगी जाती है, वह आपकी ओर सहायता के लिए हाथ बढ़ाए मौजूद होता है।

ना भूलो माँ-बाप को



भूलो सभी को तुम, मगर माँ-बाप को भूलो नहीं, उपकार अगणित हैं, कभी इस बात को भूलो नहीं। पत्थर कई पूजे, तुम्हारे जन्म की खातिर, पत्थर बन माँ-बाप की छाती कभी कुचलो नहीं। सुख का निवाला दे अरे, जिन्होंने तुम्हें बड़ा किया, अमृत दिया तुमको, जहर उनके लिए उगलो नहीं। कितने लड़ाए लाड़, सब अरमान भी पूरे किये, पूरे करो अरमान उनके, गर्व में झूलो नहीं। लाखों कमाते हो भले, माँ-बाप से ज्यादा नहीं, सेवा बिना सब राख है, मद में कभी फूलो नहीं। संतान की सेवा मिले, संतान बन सेवा करो, जैसा करो वैसा भरो, इस सत्य को भूलो नहीं। जो स्वयं गीले में रहकर सुलाती थी तुम्हें सूखे में, माँ की बरसती भावना को, तुम कभी कुचलो नहीं। धन तो मिलेगा फिर मगर माँ-बाप क्या मिल पाएंगे, उनके चरण की धूल लेना, तुम कभी भूलो नहीं। पाकर आशीर्वाद माँ का तुम, जीवन सुखी बना लो, चलकर पिता की पगडंडी, अर्थ मार्ग सुलभ हो भूलो नहीं।

मानव वृक्क



वृक्क अधिकांश जीव जंतुओं होते हैं, जो उदर गुहा के के शरीर का आवश्यक अंग पृष्ठभाग में जायाफ्राम में नीचे हैं। इस लेख में मानव शरीर व कशेरुकदण्ड के इधर से संबंधित उल्लेख है। उधर (दाएँ बाएँ) स्थित होते मनुष्य में एक जोड़ी वृक्क हैं। दाहिनी ओर यकृत की

प्रधानमंत्री ने विकलांगों को दिया नया नाम "दिव्यांग"

विकलांगता पर मोदी ने कहा कि परमात्मा ने जिसके शरीर में कुछ कमी दी होती है हम उसे विकलांग कहते हैं। लेकिन जब हम ऐसे व्यक्तियों से मिलते हैं तो हमें पता चलता है कि उनकी एक शारीरिक क्षमता भले ही चली गई हो लेकिन उनमें दूसरी कोई ऐसी कुशलता होती है

जो आम लोगों में नहीं होती। मोदी ने ऐसे लोगों के लिए विकलांग की जगह "दिव्यांग" शब्द इस्तेमाल करने की पैरवी की। मोदी ने कहा कि हम रेलवे, बस स्टैंड से लेकर तमाम सार्वजनिक जगहों पर इन लोगों के लिए सुविधापूर्ण बनाने पर ध्यान दें प्रधानमंत्री

नरेंद्र मोदी ने साल 2015 की आखिरी 'मन की बात' कार्यक्रम के जरिए उक्त संबोधन दिया।



नैतिक शिक्षा और आज का समाज

हमें याद है जब हम छोटे थे तो हमारे पाठ्यक्रम में एक नैतिक शिक्षा की पुस्तक होती थी जो सरदार भगत सिंह, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद आदि मनीषियों व उनकी वीरगाथाओं की प्रेरणा स्रोत होती थी। जिन्हें पढ़कर बहुत आनंद आता था और मन में उन जैसा बनने की तीव्र इच्छा होती थी। साथ ही जब बचपन में हम गाँव के बुजुर्ग दादा-दादियों की संगत में कुछ पल व्यतीत करते थे, तो वे हमको बहुत सारी अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाया करते थे जिसका कुछ न कुछ प्रभाव हमारे मन मस्तिष्क पर पड़ता था। उनमें से कुछ कहानियाँ प्रेरणादायी होती थी, कुछ परोपकारी होती थी, कुछ जीवों पर दया करने वाली होती थी, कुछ देवी देवियों की होती थी और कुछ क्षेत्रीय कहानियाँ होती थी और सबका उद्देश्य हमारे अन्दर अच्छे संस्कारों को डालने का होता था और जो कि हमें संस्कारित बनाए रखने में आज भी बहुत मदद करते हैं। आज भी यदि हमारे कदम अपने पथ से विचलित होने का प्रयास करते हैं तो वो पुरानी

कही हुई बातें याद आज जाती है और जो हमें फिर से सही पथ पर ले जाने का प्रयास करती हैं। कहते हैं कि जब बच्चा छोटा होता है तो उस समय उसका मस्तिष्क बिल्कुल शून्य होता है। आप उसको जैसे संस्कार और शिक्षा देंगे वो उसी राह पर आगे बढ़ता है। अगर बाल्यकाल में बच्चे को अच्छे-बुरे, सही-गलत को पहचानने की समझ दे दी जाती है तो वह जीवन भर उसका साथ देती है। हमारे समाज में माता पिता के बाद गुरु और तत्पश्चात देवता को स्थान दिया गया है। जहाँ बच्चा माता पिता से ही गुरु तथा देवता के बारे में सीखता है तथा समझता है बाल्यकाल में बच्चे को संस्कारित करने में घर के बुजुर्गों का, माता पिता का बहुत बड़ा हाथ होता है। परंतु दुःख की बात तो यह है कि ये सब ही हमारे जीवन से बहुत दूर हो गयी हैं। अब शायद ही किसी बच्चे को वो दादा दादी की कहानियाँ सुनने को मिलती होंगी, वो लोरी वो गीत सुनने को मिलते होंगे और शायद न ही कोई माँ बाप के पास इतना समय है कि वो अपने बच्चे को संस्कारित होने के संस्कार दे सकें। यही कारण है कि आज की नयी पीढ़ी दुर्गा माता को लोइन वाली लेडी और गणेश जी को एलिफेंट मैन के नाम से जानती है।

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

जब मैं पविणय सूत्र में बंधा



मुझे याद है 29 अप्रैल 1968 को परिणय-सूत्र का दिन आया। जब बारात तांगों में भीण्डर रेलवे स्टेशन गयी थी। भीण्डर से मावली गये मावली से ट्रेन बदली वहां से अजमेर गये, वहां पर बारात का श्री रतनलाल जी साहब जिनके पूज्य पिताजी श्री

गुलाब चन्द्र जी साहब, गोपी किशन जी के बड़े भ्राता। रतनलाल जी गर्ग साहब के यहां विवाह हुआ। नीचे उहरे हुए ग्राउण्ड फ्लोर चौक पर, अच्छा व अद्भूत रहा। बहुत आनन्द आया। मैं धन्य भागी हूँ। आदरणीय कमला जी सु-संस्कारी पधारिं हमारे प्रिय भगवती लाल जी चौबीसा साहब जो भगवान के चरणों में बिराजे है, हमारे पण्डित साहब भी रुके, खूब आदर होता है बीकानेर वाले जीया जी, परम आदरणीया कुसुम जी, आदरणीय गीता बाई सिंघल, सहृदय विमला जी किशनगढ़, सन्तोष जी ब्यावर, हमारे खेमराज जी साहब बड़े भाई साहब, ओमजी भैया, हमारे गोविन्द जी प्रिंसीपल साहब रिटायर्ड, बहुत अच्छे महान व्यक्ति, स्नेह लता जी, हमारे भाई राजु जी गर्ग साहब ये भी बहुत अच्छी सेवा कर ही रहे हैं। आदरणीय रेखा जी, सरोज जी, अमृत जी सभी अच्छे महानुभाव हैं। बड़ा भाग्यवान हूँ - मैं। सब कुछ मिला प्रेम, स्नेह, कई घटनायें घटी, अच्छी-अच्छी घटनायें घटी। बुरी घटना मेरे जीवन में बहुत कम आई, नहीं के बराबर आई, मुझे याद भी नहीं।

क्रमशः अगले अंक में ...

- एक - ताजगी!
- एक - सपना!
- एक - सच्चाई!
- एक - कल्पना!
- एक - अहसास!
- एक - आस्था!
- एक - विश्वास!

यही है एक अच्छे साल की शुरुआत!
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें!

नव वर्ष की पावन बेला में,
है यही शुभ सन्देश
हर दिन आये आप के जीवन में,
लेकर खुशियाँ विशेष!
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें!

सदा दूर रहो गम की परछाइयों से
सामना न हो कभी तन्हाइयों से,
हर अरमान हर ख्वाब पूरा हो आपका
यही दुआ है दिल की गहराइयों से,
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें!

आपकी आँखों में सजे है जो भी सपने,
और दिल में छुपी है जो भी अभिलाषाएं!
यह नया वर्ष उन्हें सच कर जाए
आप के लिए यही है हमारी शुभकामनायें!

इस रिश्ते को यूँही बनाये रखना,
दिल में यादो के चिराग जलाये रखना,
बहुत प्यारा सफर रहा 2015 का,
अपना साथ 2016 में भी बनाये रखना!
नव वर्ष की शुभकामनायें!

आप खुशी में मस्त हो,
मोबाईल का नेटवर्क व्यस्त हो,
दुआ है 2016 आपके लिये जबरदस्त हो!
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें!

सुनहरी धूप बरसात के बाद,
थोड़ी सी हंसी हर बात के बाद,
उसी तरह हो मुबारक आपकी 2016,
2015 के बाद!
आपको नव वर्ष की शुभकामनायें!

सबके दिलों में हो सबके लिये प्यार,
आने वाला हर दिन लाये खुशियों का त्यौहार,
इस उमीद के साथ आओ भूल के सारे गुम,
न्यू इयर 2016 को हम सब करे वेलकम

सदा दूर रहो गम की परछाइयों से,
सामना न हो कभी तन्हाइयों से,
हर अरमान हर ख्वाब पूरा हो आपका,
यही दुआ है दिल की गहराइयों से
आपको नव वर्ष की शुभकामनायें!

नया साल आये बनके उजाले,
खुल जाये आपकी किरमत् के ताले!
हमेशा आप पर रहे मेहेरबान घरवाले,
चाँद तारे भी आप पर ही रोशनी डाले।
आपको नव वर्ष की शुभकामनायें!

डे बाय डे आपकी खुशियां हो जायें डबल,
आपकी जिंदगी से डिलीट हो जायें सारे टूबल,
भगवान रखे हमेशा आपको स्मार्ट एंड फिट,
आपके लिये नया साल हो सुपर डुपर हिट!

सम्पादकीय

मनुष्य उन वस्तुओं और व्यक्तियों के पीछे अहर्निश पागलों की तरह भाग रहा है, जो स्थायी रूप से उसके पास रहने वाली नहीं हैं। दुख इस बात का है कि इसे समझते-बूझते भी वह इससे आँख मूंदे हुए है। सब जानते हैं कि एक न एक दिन मरना है, किन्तु उस मरण को सुधारने का प्रयत्न नहीं करते। मनुष्य अच्छी-बुरी हर परिस्थिति में सत्य पथ पर अविचलित चलता रहे तो उसे जीवन में अपने - पराए का बोध और दुख कभी अनुभव भी नहीं होगा। इच्छाओं के पूर्ण न होने पर ही मनुष्य दुःखपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

जीवन के हर मोड़ पर लिये जाने वाले छोटे या बड़े निर्णयों का आधार हमारे उद्देश्य पर निर्भर है, जहाँ उद्देश्य नहीं वहाँ जीवन नहीं। यही बात हमारे ऋषि-मुनि, सन्त और शास्त्र भी कहते रहे हैं। अब सवाल यह पैदा होता है कि आखिर उद्देश्य क्या हो और उसे निर्धारित कैसे करें? इसका हमारे पुरखों ने बहुत सीधा- सादा उत्तर भी तलाशकर हमें दिया है और वह है- केवल यह जान लें कि "मैं कौन", इस विषय में यदि हम जागरूक हो गए तो उद्देश्य तो मिला ही, जीवन की कई समस्याओं का हल भी मिल जाता है। "मैं" से ऊपर उठकर हम सत्य को, वास्तविकता को स्वीकार करने लगेंगे तो सन्देह के सारे बादल छंट जाएंगे। हम अपने भीतर स्पष्टता और शुद्धता महसूस करने लगेंगे। यही समझ, शक्तिरूप, मार्गदर्शक बनकर हमें मानवता के लिए करुणा, दया, संवेदना और सम्भाव के साथ जीवन जीने के लिए सक्षम बनाएगी। तब प्राणी मात्र से स्नेह- प्यार हमारे लिए स्वाभाविक और अपरिहार्य हो जाएगा। जीवन में आनन्द की हिलोर उठेगी, समस्याओं के बन्धन टूट जाएंगे। जीवन उन्मुक्त हो उठेगा।

2016

मन की जीत परिवार की ओर से सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ।

मन्नाजी का बलिदान

महावत के मारे जाने पर घायल हाथी मानसिंह सहित युद्ध भूमि से भागने लगा था, लेकिन मानसिंह ने उसे नियंत्रित कर लिया। युद्ध उस समय और भी भयानक हो उठा, जब राणा प्रताप के आक्रमण को देखकर असंख्य मुगल सैनिक उसी तरफ बढ़े और प्रताप को घेरकर चारों तरफ से उन पर प्रहार करने लगे। राणा प्रताप के सिर पर मेवाड़ का राजमुकुट लगा हुआ था। इसलिए मुगल सैनिक उसी को निशाना बनाकर वार कर रहे थे। राजपूत सैनिक भी राणा को बचाने के लिए प्राण हथेली पर रखकर संघर्ष कर रहे थे। परन्तु धीरे-धीरे राणा प्रताप संकट में फँसते जा रहे थे। स्थिति की गम्भीरता को परखकर झाला सरदार 'मन्नाजी' (या 'झाला मान') ने स्वामिभक्ति का एक अपूर्व आदर्श प्रस्तुत करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। झाला सरदार मन्नाजी तेजी से आगे बढ़े और प्रताप के सिर से मुकुट उतार कर अपने सिर पर रख लिया और तेजी के साथ कुछ दूरी पर जाकर घमासान युद्ध करने लगे। मुगल सैनिक उन्हें ही प्रताप समझकर उन पर टूट पड़े और प्रताप को युद्ध भूमि से दूर निकल जाने का अवसर

मिल लिया था। सन् 1597 में चावंड में उनकी मृत्यु हो गई थी। अकबर की अधीनता स्वीकार न किए जाने के कारण प्रताप के साहस एवं शौर्य की गाथाएँ तब तक गुंजित रहेंगी, जब तक युद्धों का वर्णन किया जाता रहेगा। युद्ध के दौरान प्रताप का स्वामिभक्त घोड़ा चेतक घायल हो गया था, फिर भी वह बुरी तरह घायल हो चुके अपने स्वामी को युद्ध स्थल से दूर निकाल ले जाने में सफल रहा। उसने अपने स्वामी की शत्रुओं के हाथ में पड़ जाने से रक्षा की और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ। युद्ध स्थली के समीप ही चेतक की स्मृति में स्मारक बना हुआ है। अब यहाँ पर एक संग्रहालय है। इस संग्रहालय में हल्दीघाटी के युद्ध के मैदान का एक मॉडल रखा गया है। इसके अलावा यहाँ महाराणा प्रताप से संबंधित वस्तुओं को भी सहेज कर रखा गया है।

भगवान शंकर के त्रिशूल पर बसी है वाराणसी



वाराणसी नगर की रचना गंगा के किनारे है, जिसका विस्तार लगभग 5 मील में है। ऊँचाई पर बसे होने के कारण अधिकतर वाराणसी बाढ़ की विभीषिका से सुरक्षित रहता है, परन्तु वाराणसी के मध्य तथा दक्षिणी भाग के निचले इलाके प्रभावित होते हैं। नगर के आकार की धार्मिक मान्यताओं के आधार पर व्याख्या करने के अनेक प्रयास किए गये हैं। इन मान्यताओं की भौगोलिक व्याख्या को कमोवेश स्वीकारा गया है। ऐसे सामान्यतरु प्रचलित विश्वासों की सूची इस प्रकार बनाई है। कृत त्रिशूल:- इस त्रिशूल के तीन शूल हैं- उत्तर में ओंकारेश्वर, मध्य में विश्वेश्वर तथा दक्षिण में कदारेश्वर। यह तीनों गंगा तट पर स्थित हैं। मान्यता है कि यह नगरी भगवान शिव को समर्पित है और उनके त्रिशूल पर स्थित है। त्रेतायुग चक्र:- चौरासी कोस यात्रा के तदनु रूप है जो गंगा के निकट अवस्थित है। द्वापर रथ:-सात प्रकार के शिव मंदिर, रथ का समरूप बनाते हैं। ये हैं- गोकर्णेश्वर, सु ल त अ न के श व र , मणिकर्णेश्वर, भारभूतेश्वर, विश्वेश्वर, मध्येश्वर तथा ओंकारेश्वर। इस आकार में भी गंगा नदी की महत्वपूर्ण भूमिका है। शंखाकार:- यहाँ भी मंदिरों की स्थिति के समरूप आकार माना गया है और गंगा नदी यह आकार निर्धारित करती है। इस आकार को बनाने वाले मंदिर हैं- उत्तर पश्चिम में विध्वराज और विनायक, उत्तर में शैलेश्वर, दक्षिण पूर्व में कदारेश्वर और दक्षिण में लोलाक।

अहंकार जीवन की सबसे बड़ी बाधा

अहंकार मिटने पर ही बाहुबली बने भगवान

जैन संतों के श्रीमुख से यह कथा प्रायः सुनी जाती है। यह भगवान बाहुबली से संबंधित है, जिनकी कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में विशाल प्रतिमा लगी हुई है। उनका नाम इसलिए बाहुबली था, क्योंकि वे विशाल शरीर और अपार बल के स्वामी थे। भगवान ऋषभदेव ने सन्यास लिया तो उनकी प्रेरणा से बाकी पुत्रों ने भी सन्यास का मार्ग अपना लिया, किन्तु बाहुबली ने ऐसा नहीं किया। तब लोगों का आग्रह बढ़ा और धीरे-धीरे बाहुबली के मन में भी सन्यास का विचार आने लगा। किन्तु एक दिक्कत थी, यदि वे सन्यास लेते तो उन्हें आयु में छोटे भाईयों को प्रणाम करना पड़ता। आखिर वे छोटे होने के बावजूद सन्यास के मार्ग पर उनसे आगे निकल चुके थे। बाहुबली ने सोचा कि यदि मैं इतना तप कर लूँ कि सन्यास के मार्ग पर पहले



कठोर तप, फिर भी बुद्धत्व क्यों नहीं घटता? यह सुनकर ऋषभदेव मुस्कराए और उन्होंने अपनी पुत्री को बाहुबली के पास भेजा। उसने जाकर अपने बड़े भाई बाहुबली के कान में धीरे से कहा-हाथी की सवारी बहुत हो गई अब जरा नीचे उतरों। कहते हैं कि उसके बाद तत्क्षण बाहुबली ने अपने छोटी बहन के चरण छुए और सन्यास घटित हो गया, क्योंकि उनका तप इसलिए था कि अपने से छोटे को क्यों प्रणाम करूँ। तप बहुत ऊंचा हो चुका था, किन्तु छोटे को प्रणाम न करने का अहंकार शेष था, इसीलिए सन्यास घटने में बाधा थी। जैसे प्रणाम किया, बाहुबली स्वयं भगवत तुल्य हो गये। सार यह है कि अध्यात्म समेत किसी भी क्षेत्र में अहं के त्याग के बिना इंसान की उन्नति संभव नहीं है।

निकल चुके अपने अनुजों से आगे हो जाऊँ, तो फिर अनुजों को ही मुझे नमन करना होगा। यह सोच कर बाहुबली ने इतना कठोर तप किया कि उनके शरीर पर चींटियों ने घर बना लिया तथा हाथ-पैरों पर लताएँ चढ़े गईं। पर बाहुबली नहीं थमे। उनका तप निरंतर बढ़ता गया। तप का तेज इतना फैला कि सारा वातावरण इससे प्रभावित हो गया। यह देखकर लोग भगवान ऋषभदेव के पास पहुंचे और पूछने लगे, 'इतना

चाणक्य नीति

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है और एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। चाणक्य

सर्दियों में स्वस्थ रहने के बेहतरीन उपाय

विटामिन सी - सर्दियाँ आते ही खांसी, जुकाम, बुखार, फ्लू आदि शिकायत होने लगती है। अतः डायट में विटामिन सी से भरपूर चीजें शामिल करें। ये इम्मून सिस्टम को मजबूत बनाकर बीमारियों से बचाता है। विटामिन सी कोलेजन निर्माण में भी मदद करता है। इससे सर्दियों में भी त्वचा की चमक बरकरार रहती है। सभी तरह के खट्टे फलों में विटामिन सी पाया जाता है, जैसे- संतरा, नींबू आदि। इसके अलावा खजूर में भी विटामिन सी होता है। आजकल मार्केट में विटामिन सी की टैबलेट्स भी उपलब्ध हैं। विटामिन डी - जैसे- संतरा, नींबू आदि। इसके अलावा खजूर में भी विटामिन डी होता है। आजकल मार्केट में विटामिन डी की टैबलेट्स भी उपलब्ध हैं। विटामिन डी - जैसे- संतरा, नींबू आदि। इसके अलावा खजूर में भी विटामिन डी होता है। आजकल मार्केट में विटामिन डी की टैबलेट्स भी उपलब्ध हैं।



टंडी में कई लोगों को जोड़ों में दर्द की शिकायत हो जाती है। उनके लिए विटामिन डी बेहद जरूरी है। सुबह की धूप ज्यादा फायदेमंद होती है। स्रोत विटामिन डी का सबसे अच्छा स्रोत है धूप, लेकिन आप यदि किसी कारण से पर्याप्त धूप नहीं ले पाते, तो बाजार में मिलने वाले विटामिन डी फोर्टिफाइड मिल्क और सीरियल्स भी खा सकते हैं। विटामिन ई - सर्दियों में त्वचा रूखी और पपड़ीनुमा हो जाती है, अतः विटामिन ई का सेवन जरूरी है। इसमें मौजूद माइश्चर के गुण त्वचा को कोमल बनाए रखने में मदद करते हैं। स्रोत पालक, ब्रोकली आदि विटामिन ई के अच्छे स्रोत हैं। इमली में भी विटामिन ई की भरपूर मात्रा होती है।

केवल पर सीधा प्रसारण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमन्दितां की सेवा में सतत संस्कार

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायतार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

समस्त भक्तगण, दिल्ली

दिनांक : 01 से 07 जनवरी 2016

स्थान: श्री लोहाना अतिथि भवन, परिक्रमा मार्ग, जतीपुरा, गोवर्धन, मथुरा (उ.प्र.)

समय : दोप. 03.00 से सांय 06.00 बजे तक

कथा व्यास : राकेश भारद्वाज जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान कराएंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार इंट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 09211259134, 09990732112

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

प्रधान अग्रवाल अनुराधा अग्रवाल नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कैलाश 'मानव' संस्थापक चैतन्य नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

कमला देवी कोषाध्यक्षा नारायण सेवा संस्थान

प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान

वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान

जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान

देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी... कृपया सपरिवार अवश्य पधारें।

अन्तर्राष्ट्रीय सेवा सम्मान समारोह एवं 'निःशुल्क' निःशक्तजन एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह

स्थान : पंजाबी बाग स्टेडियम रिंग रोड, पंजाबी बाग, दिल्ली

अवार्ड समारोह - 30 जनवरी, 2016 सामूहिक विवाह - 31 जनवरी, 2016

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

गरीब, असाहाय, अनाथों को सर्दी से बचाने का एक मानवीय प्रयास

सर्दियाँ आने वाली हैं... 10001 स्वेटर्स का अनुरोध आया है विभिन्न दूरस्थ क्षेत्रों के असाहायों का...

10001 स्वेटर दान योजना

आपके स्वेटर सर्दी में ठिठुरते बच्चों को दोगे गर्मी का अहसास

आपत्री स्वेटर्स भेंट करें या 150 रु. प्रति स्वेटर से सहयोग प्रेषित करें

स्वीकार अनुरोध-अपील, पाएँ जरूरतमंदों की दुआ...

अधिक जानकारी एवं गर्म कपड़ों का दान करने हेतु करें संपर्क 097849-71754

मुनव्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'

मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा

मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल

अध्यक्ष प्रबन्धक-ओठन लाल गाडनी

संपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी

संपादन अध्यक्षी-घनश्याम त्रिठ नौडै